

अनुभाषनों की उपयोगिता (Utility of Scale) →

① वैज्ञानिक परिपक्वता की प्राप्ति के लिए (For Attaining Scientific Maturity) →

अनुभाषन विज्ञान को इस योग्य बना देते हैं कि वह अपने अध्ययन विषय के अन्तर्गत आनेवाली घटनाओं का सही एवं प्रामाणिक माप कर सके। प्रगतेशील होना प्रत्येक विज्ञान की एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है लेकिन इसकी पूर्ति तब तक नहीं हो सकती, जब तक अनुभाषन प्रविधियों की उत्तरोत्तर वृद्धि न होती जाय। जैसा कि ग्रैंड एवं हार्ट ने लिखा है - सभी विज्ञान अधिकतम परिशुद्धता की दिशा में अग्रसर होते हैं। इस परिशुद्धता के अनेक रूप होते हैं।

② वैषमिक माप के लिए (For objective Measurement) → वैषमिकता के अभाव

जैसा कि किसी भी अध्ययन को प्रौढ़ और वैज्ञानिक नहीं कहा जा सकता है। वास्तविकता को ज्ञात करने के लिए गणनात्मक विवेचना अत्यन्त आवश्यक होती है तथा यह कार्य अनुभाषन प्रविधियों की सहायता से ही संभव हो सकता है। भौतिक विज्ञानों की तुलना में अभी इन प्रविधियों का विकास समाजशास्त्र नहीं कर पाया है। फिर भी जैसे-2 इसकी प्रगति होती जायेगी, वैसे ही वैसे गणनात्मक परिशुद्धता भी बढ़ती जाती है। जैसा कि डा० पी० वी० चंग ने लिखा है कि " यद्यपि इस क्षेत्र में बहुत-सा कार्य अभी आरम्भिक स्तर पर है, फिर भी यह कहा जा सकता है कि एक विज्ञान के रूप में बहुत-सा कार्य अभी जैसे-2 समाजशास्त्र परिपक्व होता जाएगा, वैसे-2 विद्यमान मापक यन्त्रों तथा प्रविधियों में अधिक उन्नति होगी और साथ ही अन्य अनेक नवीन न अधिक परिशुद्ध मापक प्रविधियाँ विकसित होंगी।

मूल्यांकन के पक्ष (Aspects of Evaluation) → शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य
 बालक के व्यवहार में
 वांछित परिवर्तन लाना होता है। व्यवहार और व्यक्तित्व का
 घनिष्ठ रूप से सम्बंध है। अन्य शब्दों में बालक के व्यवहार
 उसके व्यक्तित्व में अनेक पक्षों से सम्बंधित होते हैं। बालक द्वारा
 जो व्यवहार किये जाते हैं, उसके दो रूप होते हैं। बाह्य तथा
 आन्तरिक। एक दाल को जब हम भाषा की शिक्षा प्रदान करते हैं
 तो वह अपना बाह्य व्यवहार बोलने, पढ़ने तथा लिखने के माध्यम
 से व्यक्त करता है, परन्तु आन्तरिक व्यवहार उसके समझने,
 सोचने तथा भावों आदि से निहित होते हैं। इन दोनों ही
 व्यवहारों के मुख्य रूप से तीन अंग होते हैं। ज्ञानात्मक, भावना-
 त्मक तथा क्रियात्मक होते हैं। इसके निम्न पक्ष हैं -

- (क) संज्ञानात्मक पक्ष (Cognitive Aspects)
- (ख) संवेदनात्मक पक्ष (Affective Aspects)
- (ग) शारीरिक कौशल (Psychomotor Aspects)

(क) मूल्यांकन का संज्ञानात्मक पक्ष (Cognitive Aspects of Evaluation)

इसके निम्न पक्ष हैं -

- ① ज्ञान (Knowledge)
- ② वीक्षा (Understanding)
- ③ अनुप्रयोग (Application)
- ④ विश्लेषण (Analysis)
- ⑤ संश्लेषण (Synthesis)

① ज्ञान (Knowledge) → किसी भी वस्तु को आरम्भ करने से पूर्व
 हमें उसका ज्ञान होना चाहिए। उसके
 बाद उसकी जानकारी होती है। ज्ञान से हमें किसी वस्तु
 का आभास होता है। किसी वस्तु की पहचान कर लेने पर
 हमें सही वस्तु का ज्ञान हो जाता है।

ज्ञान या जानकारी का वर्गीकरण इस प्रकार से किया जा सकता है +

- (i) शब्दावली की जानकारी (Knowledge of Terms)
- (ii) विशिष्ट तथ्यों की जानकारी (Knowledge of specific facts)
- (iii) विशिष्ट वस्तुओं की जानकारी (Knowledge of specific items)
- (iv) रीति-रिवाजों की जानकारी (Knowledge of customs)
- (v) नियम तथा सिद्धान्तों का ज्ञान (Knowledge of laws and principles)
- (vi) कसौटी की जानकारी (Knowledge of criteria)
- (vii) विधियों की जानकारी (Knowledge of Methodology)

(i) शब्दावली की जानकारी (Knowledge of Terms) → प्रत्येक ज्ञान में कुछ विशिष्ट शब्दों का प्रयोग किया जाता है। वे शब्द (Terms) एक विशेष अर्थ में प्रयुक्त होते हैं।

(ii) विशिष्ट तथ्यों की जानकारी (Knowledge of specific facts) → प्रत्येक देश के कुछ विशिष्ट व्यक्ति, दिनांक तथा घटनाएँ होती हैं। जैसे - महात्मा गाँधी, 15 अगस्त, 26 जनवरी आदि।

(iii) विशिष्ट वस्तुओं की जानकारी (Knowledge of specific items)
जैसे - जूट, धागा, गुठल, भाग आदि।

(iv) रीति-रिवाजों की जानकारी (Knowledge of customs) → प्रत्येक समाज के कुछ रीति-रिवाज होते हैं। इस श्रेणी में इसी का ज्ञान सम्मिलित किया जाता है।

(v) नियम या सिद्धान्त (Knowledge of laws and principles) → प्रत्येक विज्ञानों में कुछ नियम या सिद्धान्त होते हैं। जैसे - अर्थशास्त्र में बचत का नियम, भौतिकी में आकर्षण शक्ति का नियम आदि।